अखिल भारतीय आभ्यन्तर औदुम्बर ब्राह्मण समाज, जयपुर

1098, भट्टराजाजी की हवेली, चूरुकों का रास्ता, चौड़ा रास्ता, जयपुर – 302003

रीति–रिवाज

1. **सगाई :-**

- वर राजा को लड़की वालों की ओर से चांदी का रुपया व नारीयल भेंट कर टीका किया जाता है।
- लड़के की गोद भरने में फल, मेवा व कपड़े भेंट किये जाते हैं।
- लड़के के रिश्तेदारों द्वारा कपड़ों की भेंट की जाती है।
- लड़के की सगाई के पश्चात् लड़की की गोद भरने के लिए लड़के वाले जाते हैं।
- लड़की की गोद लडके की माँ के द्वारा भरी जाती है जिसे ओढ़नी उढ़ाने की प्रथा कहा जाता है।
- लड़की की गोद में कपड़े, मेवा, मिठाई रखी जाती है व पावों में चांदी की पायजेब एवं सोने की अंगूठी पहनाई जाती है।

2. लगन की रिवाज :–

- सर्वप्रथम लगन की तिथि अर्थात मुहूर्त निकलवाया जाता है।
- इसके बाद विवाह से पूर्व का प्रथम बुधवार या गुरुवार या शुक्रवार या सोमवार को गणेशजी को न्योता दिया जाता है।
- न्योता देने की सामग्री में सर्वप्रथम चावल को हल्दी एवं घी में पीले रंग से किया जाता है। इसके बाद प्रसाद, पुष्पमाला, जनेऊ जोड़ा तथा शादी का कार्ड देकर गणेशजी के मन्दिर में न्योता देने के लिए भेजा जाता है।
- गणेशजी को न्योतकर आये व्यक्ति को द्वार पर रोली से तिलक अवश्य किया जाता है। तत्पश्चात् घर में प्रवेश दिया जाता है।

3. छोटा गणपति :–

- सर्वप्रथम छोटा गणपति की स्थापना की जाती है।
- गणपति स्थापना के बाद वर राजा के पीठी लगाई जाती है।
- चार सुहागिन स्त्रियों द्वारा धाण भरा जाता है।
- सिर पर मोड़ अवश्य धारण किया जाता है।
- छोटे गणपति में सभी महिलाओं एवं बच्चों को मुट्ठी में भरकर पताशे बांटे जाते हैं।
- जिनकी यज्ञोपवीत हो चुकी हो उन्हें पताशे नहीं बांटे जाते।
- इस दिन चावल, मूंग, लापसी, पुड़ी सब्जी बनाई जाती है व जीमण कराया जाता है।

4. तेड़े देने की प्रथा :–

- गणेश जी नोतने के बाद जाति के सभी घरों में तेड़े दिये जाते हैं।
- तेड़े देने के लिए पीले चावल साथ लेकर जाते हैं।
- विवाह की समस्त तिथियों से अवगत कराया जाता है।

5. धाण भराई :–

- सर्वप्रथम दो मूसल, दो छाजला, गेहूँ, रोली व अक्षत की सामग्री एक जगह एकत्रित की जाती है।
- दो–दो सुहागिने ओखली के आमने सामने बैठकर उसमें गेहूं डालती हैं।

- इसके बाद एक सुहागिन लकड़ी का मूसल गेहूं में डालती है उसके बाद दूसरी सुहागिन अपना मूसल गेहूं में डालती है। दोनों मूसल आपस में टकराने नहीं चाहिए। इस प्रकार चार सुहागिने बारी–बारी से पांच या सात बार इस कार्यक्रम को करती हैं।
- इसके बाद सुहागिने दो छाजले लेती हैं और धीरे–धीरे एक छाजले से दूसरे छाजले में गेहूं डालती हैं। गेहूं डालते समय आवाज नहीं आनी चाहिए। यह कार्य भी पांच या सात बार किया जाता है।

6. **मंगोड़ी चूटना :–**

- सर्वप्रथम उड़द की दाल को एक घंटे पहले गर्म पानी में भिगोया जाता है।
- पानी में भिगोने के बाद दाल को पीसा जाता है।
- पिसी हुई दाल को पानी में भिगोकर एक छाबडी में लाल कपड़ा बिछाया जाता है तथा चार सुहागिने मिलकर उस छाबडी में मंगोड़ी चूंटती है। उस पर रोली चावल से छींटे लगाये जाते हैं।

7. **आँदली भरना :–**

- पीठी लगने के बाद वर या कन्या को चौकी पर बिठाया जाता है।
- इसके बाद सभी बुआ, बहनों व ननिहाल पक्ष वालों की तरफ से गोद भरी जाती है।
- गोद में मेवा, नारियल, मिठाई, पुष्पमाला व पान और स्वेच्छानुसार रुपया या 511 रुपये रखते हैं। इसे प्रत्यक्ष आँदली का व्यवहार कहा जाता है। रोकड़ रुपये से भी आँदली का व्यवहार किया जा सकता है।

8. **बड़ा गणपति :–**

- छोटे गणपति के बाद बड़ा गणपति बैठाये जाते है।
- यदि मुहूर्त न मिले तो छोटा व बड़ा गणपति साथ–साथ बिठाये जा सकते हैं।
- गणेश पूजन के बाद मांडवा रोपने का कार्य किया जाता है।
- मांडवे में चार बांसों की पूजा करके उन्हें रोप दिया जाता है।
- इसके बाद आंदली भरने का कार्य किया जाता है। यदि किसी ने छोटे गणपति पर आंदली न भरी हो तो बड़े गणपति पर भर सकते हैं।
- इसके बाद महिलाओं व बच्चों को पतासे बांटे जाते हैं।

9. **सतीमाता :–**

- सर्वप्रथम सतीमाताजी को न्योता दिया जाता है।
- न्योता देने जाने वाले व्यक्ति को घी एवं हल्दी में चावल पीले करके दिये जाते हैं और पुष्पमाला, अगरबत्ती, प्रसाद, रोली, चावल, मोली इत्यादि से पूजा कर न्योता दिया जाता है तथा पीले चावल लाकर घर में रखे जाते हैं।
- रात्रि में सती का पाटा भरा जाता है व रातिजगा किया जाता है।

10. **सतीमाता का पाटा भरने की सामग्री :–**

- बेस (साड़ी, ब्लाउज पीस, पेटीकोट का पीस) कच्चे रंग (लाल, गुलाबी, पीला) का रखा जाता है और पेटीकोट व ब्लाउज सिला हुआ नहीं होता है।
- बिना पाये का पाटा, लाल कपड़ा, गेहूँ, नारियल, दो लगे हुए पान, मेहंदी, इत्र की सीखें, लाख का चूड़ा, गुड़, पताशे, पुष्पमाला, प्रसाद, सुपारी, पैसे, रोली, चावल, मोली, घी का दिया सामग्री काम में ली जाती है।

11. **पाटा भरने की विधि :–**

- सबसे पहले घी का दिया जलाया जाता है।
- पाटे के ललाट पर कुंकु की पीथल करके अक्षत लगाई जाता है।
- इसके बाद पाटे को धोया जाता है तथा उस पर रोली में हाथ करके हाथे लगाये जाते हैं।
- पाटे पर लाल रंग का कपड़ा बिछाया जाता है।
- फिर गेहूं रखकर उस पर नारियल को भी पीथल करके गेहूं पर रखा जाता है।
- नारियल को पेटीकोट, ब्लाउज एवं सबसे ऊपर साड़ी उढ़ाई जाती है।

- इसके बाद नारियल पर रोली चावल मोली चढ़ाई जाती है।
- नारियल के दोनों तरफ चूड़ा रखा जाता है। फिर पुष्पमाल पहनाई जाती है।
- इत्र की सींख, प्रसाद, गुड़ पताशे रखकर आखिर में पट्टे पर दोनों तरफ मेहंदी लगाई जाती है।
- इसके बाद सतीमाता के गीता गाये जाते हैं और रात्रि जागरण करने के बाद दूसरे दिन सुबह गोरनियों को जिमाया जाता है।

12. **ग्रहशान्ति :–**

- ग्रहशान्ति शरु करने से पहले उकड़ी व चाक की पूजा की जाती है।
- उकड़ी की पूजा के लिए दरवाजे पर खड्डा खोदकर सुपारी रखी जाती है और उसकी पूजा करके वापस खड्डा भर दिया जाता है।
- चाक की पूजा कन्या की माँ के द्वारा की जाती है।
- चाक पूजन के लिए थाली में रोली, चावल, सुपारी, मोली लेकर चाक पूजा जाता है। इसके बाद कुम्हारिन को बेस पहनाकर रोकड़ रुपये, गुड़ व अनाज दिया जाता है।
- इसके बाद पैरावणी बांटी जाती है। परावणी पुरुषों, औरतों व बच्चों की हाजिरी की दी जाती है।

13. **पीठी तेल चढ़ाना :–**

- सर्वप्रथम वर या कन्या के पीठी लगाई जाती है।
- तेल चढाने के लिए पापड, पत्ता, ताकू, कील, धूंसर, मूसल खई व कटोरी में तेल लिया जाता है।
- दोनों हाथ में दो वस्तुएं लेकर तेल में भिगोकर ऊपर से नीचे की ओर (सिर, कन्धा, गुठने व पांव पर) तेल चढ़ाया जाता है।
- इसके बाद राई व लूण किया जाता है।
- वर या कन्या को स्नान कराया जाता है व तिलक लगाकर पताशा मुँह में दिया जाता है।
- ग्रहशान्ति का नारियल होमने के बाद भात पहनाया जाता है।
- कन्या के विवाह में ग्रहशान्ति के बासों के साथ पांच या सात बर्तन की चौरी बांधी जाती है। अर्थात् मिट्टी के बर्तन चारों बासों के साथ रख दिये जाते हैं।
- महिलाओं व बच्चों को एक–एक ढोबे भरकर पताशे बांटे जाते हैं।

14. **लडके का विवाह :–**

- ग्रहशान्ति के बाद बारात ले जाने की तैयारी की जाती है।
- सर्वप्रथम लड़के को पीठी लगाकर नहलाया जाता है।
- लड़के का श्रृंगार किया जाता है।
- इसके बाद मांडवे के नीचे चौकी पर खड़ा करके नेक किये जाते है।
- भाभी/काकी या मामी द्वारा काजल लगाया जाता है।
- दादी, नानी द्वारा माँ का ओलीया किया जाता है।
- माँ द्वारा दूध पिलाई की रस्म अदा की जाती है।
- बहिन द्वारा राई लूण किया जाता है।
- इसके बाद घोड़ी पर बिठाया जाता है। जंवाई के द्वारा घोड़ी की बाग पकड़ायी जाती है और नेक दिया जाता है।
- घोड़ी पर बैठने के बाद पान, नारियल एवं एक रुपया हाथ में रखकर कच्चे आटे की दो पिण्डी तथा राख की दो पिण्डियाँ वर राजा पर उसार कर फेंकी जाती है।

15. **घोड़ी पूजन :–**

- चने की दाल को दो घंटे पहले पानी में भिगो दिया जाता है।
- इसके बाद दाल को तसले में या मिट्टी के बर्तन में रखकर घोड़ी को खिलाई जाती है।
- रोली, मोली, चावल, लूगड़ी (ब्लाउज पीस) मेहन्दी लगाई जाती है।

- बरात रवाना होकर लड़की के द्वार पर पहुँचती है।
- लड़के की साली को दरवाजे पर एक मांगा लेकर खड़ा रहना होता है। उस मांगे में लड़के वाले को नेग डालना पड़ता है इस नेग को वरबेड़े का नेग कहा जाता है।
- लड़का घोड़ी पर से उतरकर तोरण मारता है।
- लड़की की माँ उसे पूंखती है।
- पूंखने में वही विधि अपनाई जाती है जो ग्रहशान्ति से पहले कार्य किया जाता है।
- इसके बाद लड़के की सास नाक पकड़कर वर राजा को अन्दर ले जाती है।

16. **बसन्त पल्ला :–**

- बारात रवाना होती है तो लड़के वाले बहू के लिये कुछ सामग्री लेकर चलते हैं जिसे बसन्त पल्ला कहा जाता है।
- कन्या के लिए छोटा व बड़े बसन्त के दो बेस, माथा गुथाई व वरनागी की एक–एक साड़ी, एक साड़ी मंडप पर डालने के लिए, इस प्रकार दो बेस व तीन साड़ी, सोने की रकम, चांदी की पायजेब एवं चुटकियाँ, मेहंदी, रोली, मोली लच्छा, फल, पताशे, नारियल, मेवा मिठाई इत्यादि सामग्री लेजाई जाती है।
- बारात पहुँचने के बाद कन्या को चौकी पर बैठाया जाता है और लड़के के पिताजी द्वारा बहू को बसन्त पल्ला पहनाया जाता है।
- सर्वप्रथम बहु को टीका किया जाता है।
- गोदी में एक कपड़ा रखा जाता है जिसमें कि गोद का सामान रखा जा सके।
- बहु को बेस पहनाया जाता है।
- फल, मेवा, पताशे, नारियल गोद में रखे जाते हैं।
- सोने व चांदी की रकम पहनाई जाती है तथा थाली में बहू के पावों को रखा जाता है।
- लड़के के पिताजी द्वारा दूध से पांव धोये जाते हैं व रोली अक्षत से पूजा की जाती है।
- इसके बाद घर में प्रवेश करवाया जाता है। उसी समय छोटे बसन्त की साड़ी भी पहना दी जाती है।
- लड़के व लड़की को मंडप में बिठा दिया जाता है तथा कन्यादान की रस्म शुरु की जाती है।
- कन्यादान होने के बाद बारातियों को भोजन करवाकर फेरो की रस्म शुरु की जाती है।
- फेरों में लड़के वालों की तरफ से लड़की के भाई को कपड़े दिये जाते हैं। इस रस्म को सालाकटारी के कपड़े कहा जाता है।
- फेरे होने के बाद बहु की विदाई की रस्म अदा की जाती है।
- विदा होने से पहले लड़की के मांडवे पर एक साड़ी डाली जाती है जिसे मांडवा ओच्छाई की रस्म कहा जाता है।
- सालियों द्वारा वर राजा के जूते छुपाने की रस्म होती है। जूते वापस लेने के लिए सालियों को यथाशक्ति नेग दिया जाता है।
- विदाई के समय लड़की वालों द्वारा सभी को कुछ दिया जाता है जिसे पैरावणी की रस्म कहा जाता है।
- बहु के घर पर आने पर एक कचोले में कंकु घोला जाता है।
- कंकु से दरवाजे के दोनों ओर साथिये बनवाये जाते हैं।
- बहू के पैरों को कंकु में करवाकर घर के अन्दर जहाँ गणेशजी विराजमान हैं वहाँ तक ले जाया जाता है।
- बहनों द्वारा भाई व भोजाई का रास्ता रोका जाता है तथा उन्हें नेग दिया जाता है।
- गणेशजी व सतीमाताजी के ढोक दिलवाई जाती है।
- दूसरे दिन वर व कन्या से आपस में कांकण डोरे खुलवाये जाते हैं।
- कचोले में कंकु घोलकर दोनों के कांकण डोरे व साथ में सोने की अंगूठी उसमें डाली जाती हैं।
- कचोले में हाथ घोलकर दोनों वर वधू सोने की अंगूठी के पाने का प्रयास करते हैं व जिसके भी हाथ में अंगूठी आती है वह उसी की हो जाती है।
- उक्त प्रक्रिया पांच या सात बार दोहराई जाती है।
- इसके बाद घर पर बहू आने का जीमण किया जाता है या गणेशजी के ब्राह्मण जिमाये जाते हैं।

- फिर देवी–देवताओं को विदा किया जाता है एवं मांडवे की तसी खोल दी जाती है जिसे मांडवेतर कहा जाता है।
- घर के देवी देवता ढोकने के बाद सबसे पहले गणेशजी के ढोक देने वर और कन्या को ले जाया जाता है।
- इसके बाद सतीमाता, दांदू के भैंरू तथा घाट के बालाजी के यहाँ जात दी जाती है।
- इन मन्दिरों में आने से पहले कुछ नाश्ता पानी करके ही आया जाता है।
- जात देने के लिए पुष्पमाला, प्रसाद, रोली चांवल, मोली, जनेऊ जोड़ा, मोड़ एवं गठजोड़े का कपडा आदि सामग्री साथ में लानी होती है।
- जात देते समय गठजोड़ किया जाता है।
- बहू के सिर पर मोड़ बांधा जाता है।

17. **संपुट :–**

- दो सराइयों के बीच में राई व नमक डालकर मोली लच्छे से चारों तरफ से संपुट बांधा जाता है।
- इस पर वर व कन्या दोनों के पांव रखवाकर फुडवा दिया जाता है।

18. **लड़की का विवाह :–**

- लड़की के विवाह में गणपति से लेकर ग्रहशान्ति तक की रस्म लड़के के विवाह के अनुसार ही की जाती है।
- ग्रहशान्ति के बाद व बारात द्वार पर आने से पहले कन्या को स्नान करवाकर पानेतर (सफेद साड़ी) व ऊपर चुंदड़ी पहनाकर गणेशजी के स्थान पर गोखे के पास बिठाया जाता है जहाँ पर कन्या अक्षत डालती है।
- दरवाजे पर बारात आने से पहले मांडवे में चौंरी बांधी जाती है।
- चारों बांसों के साथ पांच सा सात बर्तनों की (मिट्टी के कच्चे बर्तन) जेगड़ रखी जाती है।
- सात सुहागिनों द्वारा चाक पूजकर जेगड़ लाई जाती है।
- लड़का घोड़ी पर से उतरकर तोरण मारता है।
- लड़की की माँ उसे पूंखती है।
- पूंखने में वही विधि अपनाई जाती है जो ग्रहशान्ति से पहले कार्य किया जाता है।
- इसके बाद लड़के की सास नाक पकड़कर वर राजा को अन्दर ले जाती है।
- लड़की की बहिन वरबेड़ा (खाली मांगा) लेकर खड़ी होती है उसे नेग दिया जाता है।
- वरराजा को मंडप में बिठाया जाता है।
- कन्या को गोख के पास से गोदी में उठाकर लाया जाता है और मंडप में बिठाया जाता है। कन्या के भारी होने पर हाथ पकड़कर भी लाया जा सकता है।
- वर वधू को आमने सामने बिठाकर एक लम्बी कच्चे सूत की वरमाला डाली जाती है।
- इसके बाद सभी रिश्तेदारों के द्वारा संस्कृत के श्लोकों का उच्चारण किया जाता है।
- इसके बाद कन्यादान फिर भोजन और फेरे की रस्म सम्पन्न की होती है।
- फेरों के बाद लड़की की माँ एक थाली में वर वधू के लिए दूध भात परोस कर लाती है और दोनों एक दूसरे को भोजन कराते हैं।
- सासूजी द्वारा वर राजा के बूरे से हाथ धुलवाये जाते हैं।
- लड़की की मां के उठाकर जाने पर वर राजा द्वारा सासूजी का पल्ला पकड़ लिया जाता है और उस समय लड़के को कुछ भी नेग दिया जाता है।

19. **लावणीं :–** (यह प्रथा अब लुप्त हो गई है)

- फेरे होने के बाद दूसरे दिन लड़के वालों के द्वारा लड़की वालों के यहाँ जीमण दिया जाता है। तथा पूरी जाति में बरतन बांटे जाते हैं।
- बरतनों में से पांच, सात, ग्यारह मंडप में लड़की वालों के यहाँ पर रखे जाते हैं।

20. **पैरावणी :–**

- लड़की वालों द्वारा स्वेच्छानुसार कपड़े, बर्तन इत्यादि दिये जाते हैं।
- खास खून के रिश्तों को कपड़े ही दिये जाते हैं।

21. लड़की की विदाई :–

- पैरावणी के बाद लड़की को विदा किया जाता है।
- एक कचोले में कंकु घोलकर उसमें दोनों वर व कन्या के द्वारा हाथ से लड़की अपने ससुराल वालों के और लड़का अपने ससुराल वालों की पीठ पर हाथिये लगाये जाते हैं।
- लड़की को विदा करने के बाद देवी देवताओं को विदा किया जाता है और मान्वेतर किया जाता है।
- विदा करते समय लडकी की साड़ी के पल्ले पर एक कटोरी में मिठाई बांध दी जाती है जिसे कि लाड़ी कचोला कहा जाता है।
- पैरावणी के दौरान लड़की वालों की तरफ से एक पीतल या स्टील की टंकी में चार तरह के लड्डू (मूंग, बेसन, मोतीचूर, गलपापड़ी) के 11 अथवा 21 पीस रखे जाते हैं। सवा किलो चावल, पापड, बड़ी (मंगोड़ी) बेलन तथा एक रतनपापड़ रखा जाता है। रतनपापड में लाल रत्तियाँ चिपकी होती हैं। इसका मुँह लाल रंग के कपडे से बांध दिया जाता है। यह माई मांटला लड़के की मां को साड़ी पहना कर दिया जाता है।
- एक परात में या थाली में गलपापड़ी जमा कर दी जाती है तथा लड़की को विदा कर दिया जाता है।
- विवाह में सुवाली फाफटा, देतरां तथा चार प्रकार के लड्डू बनाये जाते हैं जो कि पूरी जाति में बांट दिये जाते हैं। एक घर में चार प्रकार के लड्डू, चार सुवाली, दो देतरां, दो फाफटा बांटे जाते हैं यह जाति का लाना कहलाता है।

विवाह के बाद सम्पन्न होने वाले रीति–रिवाज

- बहू के ससुराल में रजस्वला होने पर चौथे दिन फुलेरा पुजाया जाता है।
- घर की डेली पर दोनों वर वधू को बिठाकर बहू की गोद चांवल (सवा किलो) फल, मेवा, नारियल इत्यादि से भरी जाती है।
- गोद भरने वाली सुहागिन को साड़ी दी जाती है।
- गोरनियों का जिमाया जाता है अथवा गीत गवाकर पताशे बांट दिये जाते हैं।

22. पंचवास्या पूजन :–

- गर्भवती बहू को पांचवे महीने में मुहूर्त के अनुसार लाख का चूड़ा पहनाया जाता है।

23. आठवां पूजन :–

- मुहूर्त के अनुसार पहले गणपति पूजन तथा रात्रि में सतीमाता का रातीजगा किया जाता है।
- रातीजगे में जिस स्त्री का आठवां हो उससे सती का पाटा भरवाया जाता है।
- दूसरे दिन सतीमाता की गौरणियों को जिमाया जाता है।
- इसके बाद जिसका आठवां है उसे पास के किसी भी घर में स्नान करने व सजने धजने के लिए भेज दिया जाता है। जाने से पहले देवर के एक हाथ में रोली लगाई जाती है जिससे कि वह भाभी के गाल पर चांटा मारने का दस्तूर पूरा करता है।
- धैन की गोदी में थोड़ा सा मेवा व पतासे रख दिये जाते हैं व उसको हरी लाल कांच की चूड़िया भी पहनाई जाती है। इसके बाद धैन को श्रृंगार करने के लिए भेज दिया जाता है।
- स्नान करने के बाद बच्चों के साथ एक थाली में दूध और भात खिलाये जाते हैं। तथा उन बच्चों को नेग दिया जाता है।
- धैन के श्रृंगार करने के बाद देवर उसको लेने आता है और वह अपने घर चली जाती है।

- घर में जाने से पहले धैन द्वारा संपुट पर पांव रखकर फोड़ा जाता है। और थाली में रोली घोल कर रख ली जाती है।
- धैन के दोनों पैर रोली में कर दिये जाते हैं। उसके बाद एक सफेद कपड़ा बिछाया जाता है जिस पर धैन चलती है वह द्वार से ग्रहशान्ति की जगह तक चलती है और उसे चोकी पर बिठा दिया जाता है।
- इसके बाद ग्रहशान्ति में नारियल या सुपारी होमने की पूर्णाहुति की जाती है।
- इसके बाद धैन का खोला भरा जाता है।
- यह खोला उस स्त्री से भरवाया जाता है जिसकी सभी सन्तान जीवित हों और किसी भी प्रकार का खोट न हो।
- सभी ननदे द्वारा भाभी के लिए बेस लाया जाता है। तथा ननद के द्वारा चांदी की रखड़ी हाथ में पहनाने के लिए दी जाती है।

28. **खोले का सामान :–**

- नारियल, पताशे, मेवा, पुष्पमाला, सवा किलो चांवल, कमलगट्टा, पांच फल, पान, मिठाई।
- ससुराल द्वारा धैन के लिए रकम व बेस बनवाया जाता है।
- बहू के हाथ में बंधी हुई चांदी की रखड़ी उसी दिन खोली जाती है जब वह अस्पताल जाती है।

29. **लड़का होने पर :–**

- लड़का होने पर सर्वप्रथम घर के जवांई को ओलनाल का नेग दिया जाता है।
- छठे दिन पट्टे पर कपड़ा बिछा कर बेमाता मांड दी जाती है और उसकी पूजा ननद के द्वारा करवाई जाती है।
- कमरे के द्वार के दोनों ओर गोबर के साथिये लगवाये जाते हैं और बांदरवाल बांधी जाती है।
- ननद के बच्चे के लिए कपड़े तथा खस–खस के दाने व चांवल (तिल चांवली) मिलाकर पूरी जाति में एक–एक कटोरी बांटी जाती है।
- इसके बाद श्रेष्ठ मुहूर्त में सूरज पूजने की प्रथा होती है।

30. **सूर्यपूजा :–**

- एक कोरे मटके में हरे पत्ते डालकर सूर्य के सामने रखा जाता है।
- इसकी पूजा बच्चे को गोद में रखकर रोली मोली चांवल प्रसाद इत्यादि से की जाती है।
- सूर्य भगवान को भोग लगाने के लिए चांवल मूंग लापसी बनाये जाते हैं।

31. **कुआ पूजन :–**

- सर्वप्रथम कुआ पूजन का मुहूर्त निकलवाया जाता है।
- कुआ पूजन का कार्य सूर्यास्त के साथ–साथ ही किया जाता है।
- यदि पास में कुआ न हो तो एक चरी में कुए का पानी लाया जाता है।
- उसे चोकी पर रखकर उसके ऊपर हरे पत्ते लगाकर एक लोटा पानी का रखा जाता है।
- पट्टे पर सात पान बिठाये जाते हैं।
- सात पानों पर सात पताशे, सात प्रकार का धान, सात रुपये, सात साबुत सुपारी रखी जाती है।
- इसके बाद इनकी रोली अक्षत मोली से पूजा करके सबको समेट कर कुए के पानी के कलश में डाल दी जाती है।
- दो बूंद मां का दूध लोटे के पानी में डालकर पानी चरी में डाला जाता है।
- जच्चा के जलवा पूंजने के समय बच्चे के पलंग के पास दो बच्चों को बिठा दिया जाता है।
- नवशिशु को झूले में अथवा पलंग पर रहने दिया जाता है।
- जो जच्चा कलश की पूजा करने जाती है तब उसका पल्ला एक छोटे बच्चे से पकड़ा दिया जाता है तथा उसे नेग दिया जाता है।

- जलवां पूजने के बाद बच्चे को पीताम्बर की झोली में झुलाया जाता है तथा नामकरण किया जाता है।

32. **बोटण :–**

- बच्चे का बोटन तीन से छः महीने के बीच किया जाता है।
- बच्चे को चांदी के सिक्के से बुआ द्वारा खीर चटाई जाती है। तथा एक पट्टे पर माला, पुस्तक, चाकू, कैंची इत्यादि सामान रखा जाता है और बच्चे से उठवाया जाता है।

33. **मुंडन :–**

- छोटा गणपति बिठाकर सतीमाताजी का रातीजगा किया जाता है तथा जाति का जीमण किया जाता है।
- बच्चे का मुंडन नाई द्वारा किया जाता है। तथा उन बालों को लाल कपड़े में बुआ से इकट्ठा करवाया जाता है तथा जहां भी कुलदेवता हो उनके यहाँ पर बाल चढ़ा दिये जाते हैं।
- शाम के वक्त दो मुट्ठी पताशे बांटे जाते हैं।

34. **यज्ञोपवीत (जनेऊ) :–**

- सबसे पहले छोटा गणपति को बिठाया जाता है।
- उसके बाद सतीमाता का रातिजगा किया जाता है।
- सवेरे सती की गौरणिया जिमाई जाती है। तथा दोपहर में जनेऊ पहनाने का कार्य किया जाता है।
- यदि एक ही दिन में ग्रहशान्ति वह जनेऊ का कार्यक्रम हो तो दोनों समय का भोजन जाति वालों को करवाया जाता है। दोपहर में कलवे का जीमण करवाया जाता है।
- जनेऊ पहनने के बाद बड़वे को दौडाया जाता है।
- मामा द्वारा बड़वे को सजा धजा कर वरघोडा निकालकर वापिस घर पर लाया जाता है।
- जनेऊ में भिक्षा भी दी जाती है। बड़वे द्वारा जो भिक्षा दी जाती है उसमें एक बड़ा भिक्षाला एवं दूसरे 11, 21 भिक्षाले छोटे कर सकते हैं।
- इसके ऑदली भरने व पीठी लगाने का कार्य किया जाता है।

35. **बड़े भिक्षाले का सामान :–**

- एक टोकरे में सवा किलो चावल, चार तरह के लड्डू (मूंग, बेसन, गलपापड़ी, मोतीचूर) श्रृद्धानुसार 5, 11 या 21 पीताम्बर थाली कटोरी, धीबिया, धोती इत्यादि।
- उपरोक्त भिक्षाला बटुक द्वारा घर की बड़ी लड़की या बुआ को दिया जाता है।
- छोटे भिक्षालों में चार प्रकार के लड्डू, घी का छालिया, धोती, कटोरी इत्यादि रखे जाते हैं।
- इसके बाद बटुक द्वारा भिक्षा मंगाई जाती है। बटुक को सभी रिश्तेदारों द्वारा भिक्षा दी जाती है।
- शाम को जाति का जीमण कराया जाता है। जीमण के पहले या बाद में पताशे बांटे जाते हैं।
- जीमण के पहले या बाद में केवल जनेऊ वाले ब्राह्मणें को दक्षिणा दी जाती है।
- देवी–देवताओं को ढोक देकर मांडवेतर किया जाता है। अर्थात देवी देवताओं व बहन बेटियों को यथाशक्ति विदागिरी देकर विदा कर दिया जाता है।

35. **मृत्यु हो जाने पर रीति–रिवाज :–**

- घर में किसी की मृत्यु हो जाने पर सर्वप्रथम सबसे नीचे वाली मंजिल में गोबर में जौ मिलाकर चोका लगाया जाता है।
- इस चोके पर प्राणी को सुला दिया जाता है और ऊपर चादर उढ़ा दी जाती है।
- इसके बाद पूरी जाति में दाग के बुलावे लगाये जाते हैं।
- प्राणी की मृत्यु के कुछ क्षण पहले यदि पता हो तो एक सीवा (आटा, दाल, मसाले, चांवल, घी, चीनी इत्यादि) पास के मन्दिर में भिजवा दिया जाता है।
- प्राणी के मुख में गंगाजल, तुलसी व सोने की फांस रखी जाती है।

- प्राणी को स्वच्छ जल से स्नान करवाकर अन्तिम संस्कार किया जाता है।
- श्मशान घाट से लौटकर आने के बाद खिचड़ी बनाई जाती है।
- खिचडी लड़के क ससुराल से या प्राणी के ससुराल से आती है।
- रोकड रुपये देने पर उसी समय बाजार से चांवल मूंग की छिलके की दाल, नमक, मिर्च, घी इत्यादि इतना ही मंगवाया जाता है जितना काम में लिया जाये अन्यथा बचा हुआ सब फेंक दिया जाता है।
- तीन दिन तक एक सराई में पानी व एक सराई में चाय बनाकर ऊपर छत पर रखी जाती है।
- तीसरे दिन से गरुड़ पुराण अथवा गीता का पाठ करावाया जाता है।
- तीये के दिन श्मशान घाट से प्राणी की अस्थियों को लाल कपड़े के थैले में रखकर लाया जाता है।
- इन अस्थियों को हरिद्वार में प्रवाहित किया जाता है।

दसवाँ

- दसवें के दिन पूरी जाति में नई के बुलावे भेजे जाते हैं।
- आदमी लोग क्रिया करने हनुमान गढ़ी जाते हैं।
- उनके घर से जाने के बाद पूरे घर की धुलाई की जाती है।
- उसके बाद जीमण के लिए खुला चूरमा, खिचड़ी, छिलके की मूंग की दाल व कड़ी बनाई जाती है। (चूरमे के लड्डू नहीं बांधे जाते व दाल व कड़ी में बघार नहीं दिया जाता।)
- सूर्यास्त से पहले–पहले ही जीमण समाप्त किया जाता है। क्यों कि जीमण के बर्तन साफ करने के बाद कथा होती है जिसकी पूर्णाहुति की जाती है।

ग्यारहवाँ

- इस दिन भी सभी क्रिया हनुमान गढ़ी में की जाती है।
- इस दिन खुला चूरमा, खिचड़ी व कड़ी ही बनती है और शाम को ब्राह्मण भोजन होता है।

बारहवाँ

- इस दिन की क्रिया घर में ही की जाती है।
- भोग के लिए भगवान विष्णु व पितरेश्वरों की दो थाली स्पेशल बनाई जाती है।
- इस थाली में खीर, दहीबड़े, लड्डू, पूड़ी, दाल चावल, चटनी, नींबू एवं अदरक रखा जाता है।
- शाम को दल के लड्डू, दाल चावल, सब्जी इत्यादि का जीमण किया जाता है।

तेरहवाँ

- इस दिन की क्रिया दोपहर में घर पर ही की जाती है।
- इस दिन कम से कम 13 नगों का दान दिया जाता है। जो निम्नलिखित हैं :–

  पद :– इसमें थाली, कटोरी, गिलास, गौमुखी, माला, आसन, धोती, रुपया, जनेऊ जोड़ा वाला सामान आता है जो केवल पुरुषों को ही दिया जाता है।

  छाबड़ी :– इसमें साड़ी, पेटीकोट, ब्लाउज, कांच, कंघा, मेहंदी, बिन्दी, काजल, चूड़ियाँ, बांस या प्लास्टिक की टोकरी आदि सामान आता है।

  सिरोपाव :– धोती कुर्ता अथवा पेन्ट शर्ट अथवा पगड़ी दुपट्टा।

  शैया दानः– पलंग, रजाई, गद्दा, चद्दर, तकिया, पांच या दस बर्तन, एक बेस, पुरुष के कपड़े, बेस पर रकम, सोने व चांदी की पुरुष के कपड़ों पर चाहें तो रकम अन्यथा रोकड़ सीदा एक, छतरी, लालटेन, जूते व चप्पलें।

  गौदान, जलदान, अष्टमादान, दीपदान, नित्यदान ये सभी दान घर की बहन, बेटियों को दिये जाते हैं।

- दीपदान मन्दिर में भिजवा दिया जाता है।
- पुरुष का स्वर्गवास होने पर पद एवं सिरोपाव किया जाता है व स्त्री का स्वर्गवास होने पर छाबड़ी व पद दान में दिये जाते हैं।

- श्रावणी क्रिया करने वाले को सूर्योदय से पहले स्नान करके धोती पहनकर श्रावणी क्रिया करवाई जाती है।
- मांगा लेकर दरवाजे के बाहर जाता है और फोड़कर या रखकर आता है।
- फिर दान पुण्य करने के बाद दक्षिणाा बांटी जाती है। दक्षिणा केवल जनेऊ वाले ब्राह्मण को ही दी जाती है।
- जीमण में दाने के लड्डू, या बरफी, दाल चावल, पूड़ी सब्जी अन्यथा स्वरूचि भोजन होता है।
- बैठक में विधवा स्त्री को पीहर व रिश्तेदारों की तरफ से साड़ी उढ़ाई जाती है जिसे रणसाड़ा कहा जाता है।

चौदहवें दिन

- यदि सोमवार या गुरुवार हो तो शोक का जीमण होता है।
- बाजार से कंघा व तेल मंगवाया जाता है। सुबह–सुबह सुहागिन औरतें सिर में तेल डालती हैं। बाल काढ कर मोली बांधी जाती है और फिर मितेल डालती हैं। बाल काढ कर मोली बांधी जाती है और फिर मिट्टी से हाथ धो लिये जाते हैं।
- बचा हुआ कंघा व तेल बाहर फेंक दिया जाता है।
- पहले घर की स्त्रियाँ स्नान करती हैं फिर एक–एक कर सभी स्नान करती हैं।
- इसके बाद जीमण स्त्री के पीहर वालों की ओर से या बेटे के ससुराल वालों की ओर से किया जाता है।
- इसके बाद सभी सुहागिनों को एक–एक ब्लाउज पीस दिया जाता है। जिसे कापड़ा कहा जाता है। जीमण करने वाले ही कापड़े बांटते हैं।
- महीने पर प्रथम मासिक श्राद्ध होता है। हर महीने मासिक श्राद्ध पर कम से कम एक ब्राह्मण जिमाते हैं।
- डेढ़ महीने की त्रिपक्षी कहलाती है।
- डेढ़ महीने, साढे पांच महीने व छ माही का जीमण होता है तथा साढे ग्यारह महीने की बरसी होती है। निम्नलिखित ऊसे होते हैं :–

आखातीज :–	तीन ब्राह्मण गोरणी अथवा जीमण करते हैं।
संक्रान्ति :–	जीमण करके गर्म कपड़े बांटे जाते हैं। सर्दियों में कम्बल या स्वेटर बांट सकते हैं। वैशाख में आम खरबूजे बांटे जा सकते हैं।
दरोह :–	भाद्रपद शुक्ला पंचमी अर्थात ऋषि पंचमी को सांवा, दूध व तोरई कोले का साग खिलाया जाता है। दूसरे दिन जीमण में खीर अथवा दूसरी मिठाई बनाई जाती है। सप्तमी को छोडकर अष्टमी के दिन फिर जीमण होता है इसमें थाली में माव के पेड़े रखकर दिये जाते हैं। यह दुर्वाष्टमी कहलाती है।
ऋषि पंचमी :–	ऋषि पंचमी के दूसरे दिन ऋषियों के नाम से पांच या सात या नो कंडिये रखते हैं उस पर एक–एक कटोरा चांदी के ऋषि दक्षिणा जनेऊ जोड़ा रखते हैं। एक अरुन्धती की छाबड़ी होती है जिसमें बेस व सभी श्रृंगार का सामान रखा जाता है। सभी कंडिये एक–एक ब्राह्मण को व छाबड़ी सुहागिन को दी जाती है। यह छट को देते हैं बरसी होने के बाद।